**AMOGHVARTA**

**ISSN : 2583-3189**

# बस्तर का अंतिम मुक्ति संग्राम–1910 भूमकालः तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक स्थिति

**ORIGINAL ARTICLE**

**Authors**
**विनिता सिन्हा,** शोधार्थी,
**डॉ. अवधेश्वरी भगत**
इतिहास विभाग
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

## शोध सार

*बस्तर प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण रियासत हैं। यहां खनिज वन संपदा जैव विविधता और नैसर्गिक सुन्दरता का भंडार उपलब्ध है। बस्तर इस कारणवश सदैव ही एक संपन्न राज्य रहा। पूरे भारतवर्ष में जब भयंकर अकाल पड़ते थे तो बस्तर क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र होता था जो कि ना केवल अपनी प्रजा को सरलता से खाद्यान्न सुरक्षा प्रदान करता था अपितु आवश्यकतानुसार अनाज के भंडारों को पड़ोसी राज्य महाराष्ट्र भेज दिया जाता था। 1810 और 1824 का अकाल कुशलतापूर्वक नियोजित किए गए प्राकृतिक प्रकोप उदाहरण है। इस प्रकार की कृषि संपन्नता सदैव आक्रमणकारियों को अपने ओर आकर्षित करती रही है। परलकोट विद्रोह इसी का एक उदाहरण हैं। परलकोट का विद्रोह तो एक झांकी के समान है जिसके पश्चात् वृहद पैमाने पर पूरे बस्तर में आदिवासी विद्रोह हुए जिन्होंने स्पष्ट रुप से दर्शा दिया कि बस्तर के आदिवासी अपनी संप्रभुता बनाये रखने के लिए खुनी संघर्ष भी कर सकते है।*

## मुख्य शब्द

*बस्तर, संग्राम, आदिवासी, विद्रोह.*

बीसवीं सदी के मध्यकाल में किस प्रकार से बस्तर औपनिवेशिक आक्रमणकारियों ने नियंत्रण प्राप्त करने का प्रयास किया और वहां की आर्थिक और समाजिक दशा में किस प्रकार से ऋणात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। आक्रमणकारियों ने सर्वप्रथम आर्थिक एवं सांस्कृतिक दशा को कमजोर करने का प्रयास किया। इसके अन्तर्गत ब्रिटिश आक्रमणकारियों ने राजगद्दी पर कार्यवाहक के रुप में स्थापित लाल कोलेंद्र सिंह को दीवानी पद हटाया। लाल कालेंद्र सिंह जन लोकप्रिय नेता थे और ब्रिटिश जानते थे कि बस्तर के आदिवासी अपने नेताओं के प्रति किस प्रकार के स्वामी भक्त होते है।

### 1910 के समय की आर्थिक और सामाजिक स्थिति

| आर्थिक सामाजिक आयाम | विवरण | प्रभाव |
|---|---|---|
| नेतृत्व | बस्तर का राजा | सभी जनजातियों के लिए पूजनीय होता था। |
| आजीविका | कृषि पशुपालन, मांस उत्पादन | कृषि जनसंख्या लालन–पालन का मुख्य स्त्रोत,<br>पशुपालन सांस्कृतिक महत्व के साथ–साथ खाद्यान्न सुरक्षा, |

| | | |
|---|---|---|
| | | मांस उत्पादन– अनुष्ठानों हेतु मांस जैसे कि बलि, ग्राम देवता पूजन, अच्छी वर्षा एवं फसल हेतु पूजन। |
| शिक्षा | औपचारिक शिक्षा व्यवस्था नहीं | कोई औपचारिक शिक्षा व्यवस्था नहीं। अंग्रेजो के द्वारा जबरन प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने पर जोर जिसका भयंकर विद्रोह हुआ। |
| सामुदायिक स्थिति | बस्तर के पूर्व विद्रोहों के विपरित 1910 के आते आते सभी आदिवासी समुदाय लगभग एकता का परिचय प्रस्तुत करने लग गये थे। गोड़ जनजातियों ने मुड़िया जनजातियों के साथ मित्रता बढ़ा दी थी, क्योंकि मुरिया उन्हें औषधि प्रदान करते थे और गोड़ इसके एवज में उन्हें मांस प्रदान करते थे। | सामुदायिक एकता में वृद्धि तथा विद्रोह की ज्वाला तीव्र करने में सहयोग। |
| आय | प्रमुख स्त्रोत–<br>• जंगली शहद<br>• लाख<br>• तेंदू<br>• महुआ<br>इन्हें मराठा व्यवसायियों को बेचा जाता था। क्षेत्र में उत्पादित सुगंधित धान भी मराठे व्यवसायीय अपने साथ ले जाते थे। इसके बदले कुछ मुद्रायें प्रदान की जाती थी जो कि वास्तवित मूल्य से अत्यंत कम और साथ में नमक की छोटी पोटली प्रदान की जाती थी। | नमक ने आदिवासियों के भोजन में नया स्वाद प्रदान किया था। नमक सरलता से आदिवासियों को प्राप्त नहीं होता था, अतः आदिवासियों का आर्थिक शोषण नमक का प्रयोग करके किया जाने लगा। |

बस्तर के स्वामी भक्ति पर कटाक्ष करने हेतु ब्रिटिश आक्रमणकारियों ने वहां लाल कालेंद्र के स्थान पर दीवान पंडा को नियुक्त किया। दीवान बैजनाथ पंडा अपनी चाटुकारिता के लिए पूरे विश्व में ख्याति प्राप्त कर चुका था। दीवान ने आते ही बस्तर मे वह नियम और नीति लागू करना प्रारंभ कर कर दिया जो कि आदिवासी हित में नहीं थी और ना ही बस्तर के विकास में। दीवान द्वारा लागू की गई नीति अंग्रेजो को प्रशासनिक रुप से छूट प्रदान करती थी कि वह बस्तर का दोहन को एक औपचारिक चोला पहला सकती है। ब्रिटिश नियंत्रण में आने के पूर्व बस्तर अपनी आजीविका के लिए वन पर निर्भर था। आदिवासी– गण वनोपज एकत्र करके वनोपज को मराठा व्यावसायियों को बेच देत थे। मराठा व्यवसायी अपने साथ कुछ मुद्राएं और नमक लेकर जाते थे। नमक की पोटली के एवज में आदिवासियों से सुगंधित धान शहद एवं बस्तर का विशेष आखेट व्यंजन ले लिया जाता था। इस प्रकार अंग्रेजों के आने से पूर्व ही मराठों द्वारा छत्तीसगढ़ के आदिवासियों का शोषण किया जा रहा था।

ब्रिटिश आक्रमणकारियों ने बस्तर को एक दुधारु गाये के रुप में देखते हुए सर्वप्रथम यहां पर यातायात व्यवस्था लागू की। यह यातायात व्यवस्था पगडंडियों के रुप में स्थिापित की गई। इन पगडंडियों के माध्यम से वनों से कीमती लकड़ियों को निकाल कर भोपालपटट्नम सुकमा राष्ट्रीय मार्ग का प्रयोग कर देश के विभिन्न अंग्रेजी नियंत्रण केन्द्रों में भेजा जाता था। अंग्रेजों को पूरे भारत में रेल लाइन बिछाने के लिए रेलवे स्लीपर की आवश्यकता थी जिसके लिये बस्तर के वनों से साल और सागौन की लकड़ी को निकाल कर मुंबई और खड़कपुर जैसे रेल विकास केन्द्रों में भेजा जाता था। इसके लिए अंग्रेज आदिवासियों को बेगारी श्रमिक बनाकर काम करवाते थे। इस

प्रकार उन्होंने बिना परिश्रामिक प्रदान किए, पूरे बस्तर की आर्थिक व्यवस्था को लचर कर दिया था। दीवान बैजनाथ पंडा ने नई वन नीति लागू कर आदिवासियों को वनों में प्रवेश करने से रोक दिया था। इस प्रकार बस्तर के आदिवासी अपनी आजीविका के मुख्य स्त्रोत खो बैठे थे। आजीविका के स्त्रोतों को नष्ट होते देख आदिवासी कृषि कार्यों की ओर रुझान प्रस्तुत करने में लग गए, परंतु बेगारी कराने के पश्चात् अंग्रेजी अफसर आदिवासियों से सुगंधित धान, मदिरा एवं मांस की मांग करते थे जिस कारण कृषि उपज का अंश मात्र ही आदिवासियों के पास रह जाता था। इस प्रकार अंग्रेजों में आदिवासियों की आर्थिक सामाजिक स्थिति को कमजोर कर दिया था और आदिवासीगण स्वयं अपने ही राज्य में दोयम दर्जे के नागरिक बनकर रह गए थे।

बस्तर जो कि मराठा काल में भी जंगली शहद, लाख, तेंदूपत्ता और महुआ के लिए जाना जाता था। ब्रिटिश काल में अपने इस पहचान को विलुप्त होते देख रहा था। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध काल में आदिवासीगणों ने अपनी आर्थिक और सांस्कृतिक दशा को निकृष्ट गहराईयों में जाते देखा। अंग्रेज आक्रमणकारियों ने बस्तर का दोहन करने के लिए अपनी जानी–पहचानी नीति जिसके अंतर्गत वह जिस क्षेत्र में नियंत्रण करते है वहां की आर्थिक, सांस्कृतिक दशा को विरोधी की कगार पर पहुंचा देना को लागू करना प्रारंभ किया। दीवान बैजनाथ पंडा ने सर्वप्रथम आदिवासियों के राज भक्ति को अपने लक्ष्य पर लिया। हल्बा जनजाति के लोग जो कि सदा ही बस्तरिया राजा के अंगरक्षक रहे है उनको अंग रक्षकों के पर से हटा दिया गया। नई व्यवस्था के अंतर्गत राजा रुद्र प्रताप के अंगरक्षक सेना द्वारा ब्रिटिस सैनिक होंगे। जगदलपुर का महल जो कि एक समय में हल्बा जनजाति के लोगों के सरंक्षण में सुरक्षित रहता था। उस पर अब ब्रिटिश सेना ने अनौपचारिक रुप से नियंत्रण कर लिया था। राजवंश पर आस्था को लक्ष्य के रुप में भेदते हुए दीवान बैजनाथ पंडा ने आदिवासी धार्मिक संस्कृति को अपने लक्ष्या पर लिया। दीवान बैजनाथ पंडा चाहता था कि बस्तर के आर्थिक से अधिक आदिवासियों ईसाई धर्म को अपना ले ताकि अंग्रेजी हुकूमत को बस्तर पर शासन करने में सफलता प्राप्त हो।

इसके अंतर्गत रणनीति बनाई गई कि राजा रुद्र प्रताप को अंग्रेजों के खर्चे पर रायपुर की राजकुमार कॉलेज शाला में शिक्षा प्राप्त कराई जायेगी ताकि राजा अंग्रेजों के एहसान तले दब जाए। दीवान की यह रणनीति पूर्ण रुप से लागू तो नहीं हो पाई परंतु राजा ने बस्तर में ईसाई मिशनरी को कार्य करने की अनुमति प्रदान कर दी।

मिशनरी अपने साथ में स्वास्थ्य संबंधित सेवाएं और औषधियों को लेते आए थे। इसके माध्यम से वह आदिवासियों का दिल जीतना चाहते थे और इसकी आड़ में वह बड़ी संख्या में धर्म परिवर्तन कराना चाहते थे। इस प्रकार से छल का प्रयोग करते हुए धर्म परिवर्तन कराना चाहते थे। इस प्रकार से छल का प्रयोग करते हुए धर्म परिवर्तन करने का प्रयास आदिवासियों की संस्कृति पर एक गहरा प्रहार था। नई वन नीति के अंतर्गत आदिवासीगण वन में शिकार करने नहीं जा सकते थे, परंतु राजा रुद्र प्रताप ने अंग्रेजों को वन में इच्छा अनुसार शिकार करने की अनुमति प्रदान कर दी थी। बस्तर के घने जंगल ब्रिटिश अधिकारियों को रोमांच प्रदान करते थे, अतः ब्रिटिश अंधाधुन शिकार कर रहे थे। जिससे आदिवासियों में हीनभावना उत्पन्न हो रही थी। आदिवासी गण पोषणीय पध्दति के माध्यम से वन से केवल उतना ही लेते है जितनी आवश्यकता होती है। परंतु ब्रिटिश अधिकारियों के द्वारा किया गया यह अंधाधुन शिकार उनकी पोषणीय व्यवस्था को बिगाड़ रहा था। मुंबई आबकारी एक्ट को नया रुप प्रदान करते हुए दीवान बैजनाथ पंडा ने बस्तर पर मदिरा निर्माण करने पर रोक लगा दी थी।

बस्तर के आदिवासियों को अब मदिरा ठेकेदारियों के क्रय करके लेनी थी। यह मंदिरा सिथेटिक मदिरा के रुप में थी अर्थात् इसे महुआ और ताड़ी का प्रयोग करते हुए नहीं बनाया गया था। आदिवासियों को यह भ्रम हो गया था कि ठेकेदोरो द्वारा निर्मित और मदिरा अपवित्र है और इसे उनके देवता स्वीकार नहीं करेंगे। इसी के साथ ही आदिवासियों को अब मदिरा क्रय करने के लिए अतिरिक्त मूल्य चुकाना पड़ रहा था जिस कारण वश उनकी आर्थिक स्थिति और कमाजोर हो रही थी। आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक रुप से बस्तर पर नियंत्रण करने के लिए बैजनाथ पंडा ने कोई कसर नही छोड़ी थी। इसका परिणाम यह हुआ कि आदिवासियों के मध्य अंग्रेजी हुकमत के प्रति एक द्वेष की भावना उत्पन्न हो गई और आदिवासी गण किसी भी स्वरुप में अब केवल बस्तर को स्वतंत्र कराना चाहते थे अर्थात् वह बस्तर पर पुनः जनतंत्र स्थापित करना चाहते थे।

**1910 के विद्रोह के प्रमुख कारण**

| आयाम | जानकारी | आदिवासी हितों का हनन |
|---|---|---|
| **नेतत्व** | लाल कालेन्द्र सिंह को दीवानी के पद से हटाया गया एवं पंडा को यहां स्थापित किया गया। इनके साथ ही गद्दी पर स्थापित किया गया नया बस्तरीया राजा ब्रिटिश कठपुतली था। | आदिवासी भावना का हनन |
| **आजीविका** | • दीवान बैजनाथ पंडा ने नई वन नीति लागू की।<br>• बेगारी व्यवस्था लागू की गई<br>• मांस और मदिरा को बिना मूल्य दिए अंग्रेजों द्वारा उपयोग में लाया जाने लगा। | • वन उत्पाद संरक्षण आधारित आजीविका चलाने वाले आदिवासी संकट से जूझने लगे। वन जो कि आदिवासियो की आत्मा के समकक्ष है में आदिवासियों को प्रवेश करने से वंचित कर दिया गया।<br>• वन में वृक्ष कटाई हेतु बिना पारिश्रमिक प्रदान किए श्रम कराया जाने लगा।<br>• दैनिक कार्य समाप्ति के पश्चात् उन्हीं से उनके घर के पशुओं का मांस एवं मदिरा मंगाई जाती। |
| **आबकारी** | नई आबकारी नीति–1878 की आबकारी नीति का विस्तृत रुप | नई आबकारी नीति के अंतर्गत मदिरा निर्माण करने पर सम्पूर्ण रोक। मंदिरा को मंदिरा ठेकेदारों से क्रय कर अनिवार्य हो गया। परिणाम स्वरुप मदिरा जो कि आदिवासी संस्कृति का अंग थी उसका प्रयोग वह स्वतंत्र रुप से नहीं कर पा रहे थे। |
| **धार्मिक** | मिशनरी बस्तर में प्रवेश | मिशनरी अपने साथ औषधि और स्वास्थ्य सुविधा लेकर आई। आशय था कि धर्म परिवर्तन इसके माध्यम से किया जाए। अतः आदिवासी धार्मिक भावना अत्यधिक प्रभावित हुई। शराब निर्माण बंदी के कारण आदिवासी अपने देवी–देवताओं को ठेकेदारों की शराब नहीं अर्पित करते थे, अतः धार्मिक अनुष्ठानों में परिवर्तन आने लगा। |
| **वन** | अंधाधुंध दोहन | रेल्वे स्लीपर हेतु वनों के तीव्रता से कटाई की जाने लगी जिससे स्थानीय पारिस्थिकीय तंत्र परिवर्तित होने लगा। |
| **शिक्षा** | नई शिक्षा नीति लागू | पंडा ने नई शिक्षा नीति लागू की, जो आदिवासी अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते थे उन्हें उल्टा लटका कर आंखों में मिर्ची का धुंआँ डाला जाता था। शाला शिक्षकों को और कर्मचारियों को आदिवासियों को यातना देने हेतु मुक्त हस्त प्रदान किया गया। |

आदिवासी विद्रोह की भावना को देखते हुए लाल कालेंद्र सिंह और महारानी स्वर्ण कुंवर देवी ने विद्रोह का नेतृत्व करने की घोषणा कर दी। दीवान और महारानी की घोषणा आदिवासी समाज के लिए पुनर्जागरण आधुनिकता और राष्ट्रीय भावना को प्रवाहित करने के लिए सक्षम थी। दोनों के नेतृत्व में आदिवासियों ने ताडोकी ग्राम में दशहरे के दिन अंग्रेज आक्रमणकारियों के विरुध्द विद्रोह करने की घोषणा की। आदिवासियो ने संकल्प ले लिया कि गुंडाधुर के नेतृत्व में मुरिया राज को बस्तर पर पुनः स्थापित करेंगे। गुंडाधुर लाल कालेन्द्र सिंह के दोस्त थे इसके साथ ही दोनों ने तांत्रिक शिक्षा एक साथ ग्रहण की थी। गुंडाधुर के नेत्त्व में आदिवासियों ने 1 फरवरी 1910 को अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह प्रारंभ किया। विद्रोह एक साथ कई केन्द्रों पर प्रारंभ हुआ जिसके कारण उस दिन अंग्रेजी सैन्य शक्ति को संभलने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। विद्रोह इतना भयंकर था कि ऐसा लग रहा था कि भूमि कंपन कर रही है। भूमि कंपन से तुलना किए जाने के कारण विद्रोह का नाम भूमकाल विद्रोह पड़ा। 7 फरवरी आते –आते महारानी ने घोषणा कर दी कि रानी बस्तर पर पुनः मुरिया राज स्थापित हो चुका है। अंग्रेजी हुकूमत ने बस्तर को पुनः अंग्रेजी नियंत्रण में लाने की जिम्मेदारी गयेर को दी। इस ब्रिटिश आधिकारी ने आदिवासी वचन परंपरा का अनैतिक उपयोग करते हुए जगदलपुर को पुनः ब्रिटिश नियंत्रण में लाया।

जगदलपुर के इस युद्ध मे गुंडाधुर बाल–बाल बचे थे। जगदलपुर में पराजय प्राप्त करने के पश्चात् गुंडाधुर ने अलवार में सैन्य शक्ति एकत्रित की और अंग्रेजों को पराजय करने का निश्चय किया। सोनूमांझी के द्वारा दिए गए विश्वासघात ने गुंडाधुर को पराजित कर दिया, परंतु गुंडाधुर बड़ी चतुराई से रात के अंधरे में ही जंगल में भाग निकले। गुंडाधुर स्वतंत्रता प्राप्त होते तक ब्रिटिश शासन के हाथ नहीं आए और आज भी कोई यह नहीं जानता कि वह इस युद्ध के पश्चात् कहां थे या उन्होंने अपने आजादी के प्रयास को कार्यशील रखा।

**1910 के घटनाक्रम**

| घटना(कालपनिक क्रम में) | सील | आदिवासी नेता |
|---|---|---|
| ब्रिटिश विरुद्ध बस्तरिया राज आवाहन | ताड़ोकी– 1909 दशहरों पर | राज माता स्वर्ण कुंवर देवी, लाल कालेंद्र सिंह विद्रोह नेता गुण्डाधुर का चयन। |
| भुमकाल विद्रोह का प्रथम दिन | 1 फरवरी 1910 | पूरे बस्ती में विद्रोह प्रारंभ |
| पुसपाल बाजार लुट | 2 फरवरी 1910 | विद्रोहियों की टुकड़ी |
| ताड़ोकी पर अंग्रेजो का धावा | 3 फरवरी 1910 | चिंटू मांझी(हल्बा) अपनी टुकड़ी के साथ अंग्रेजों को गाजर मुली की तरह काट दिया। अंत में अंग्रेजों की अधिक संख्या वाली टुकड़ी ने चिंटू को बंदी बना लिया। |
| गीदम घाटी पर नियंत्रण | 7 फरवरी 1910 | गीदम पर नियंत्रण मुरिया राज की घोषणा। |
| कोन्टा पर नियंत्रण | 7 फरवरी 1910 | धनिराम हल्बा |
| दंतेश्वरी मंदिर युद्ध | 8 फरवरी 1910 | विद्रोहीयों की हार। मंदिर का पुजारी अपने कर्तव्य को पूरा करते हुए बस्तरिया राजा के प्रति अपनी राजनिष्ठा प्रदर्शित करते हुए विद्रोहियो से लड़ा और उन्हें परास्त किया। |
| जगदलपुर पर विद्रोहियों का नियंत्रण | 24 फरवरी 1910 | राज महल को नियंत्रण में नहीं लिया गया। |
| जगदलपुर का युध्द गेयर एवं विद्रोहियों के मध्य | 24 फरवरी 1910 से प्रारंभ | विद्रोही परास्तं। जगदलपुर पर अंग्रेजी नियंत्रण पुनः स्थापित। |
| अलनार का युध्द | मई के प्रारंभिक महीने में 1910 | प्रथम आक्रमण पर गुण्डाधुर विजयी। रात में सोनु मांझी ने विश्वासघात से विद्रोही टोली को अंग्रेज ने घेर लेते है। भयानक युध्द में विद्रोही परास्त गुण्डाधुर वनों में भाग जाते है जिन्हें कभी पकड़ा नहीं जा सका। |

## निष्कर्ष

भारत में स्वतंत्रता संग्राम मध्य प्रांत के आदिवासी जनजातियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आदिवासी जनजाति देश के स्वतंत्रता में बढ़–चढ़ कर भाग लिया था। छत्तीसगढ़ का बहुत बड़ा भाग आदिवासी जनजातियों का है। इन जनजातियों के जननायकों ने अपने नेतृत्व के माध्यम से आदिवासी जनजातियों के ही नहीं वरन् सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ के लोगो को उनके अधिकारों के लिए जागरुक करने का प्रयास किया। जननायकों नेतृत्व के कारण ही लोगों में राजनीति चेतना जागृत हुई और धीरे–धीरे सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में फैल गई। आदिवासी जनजाति ब्रिटिश साम्राज्य की नीतियों का समय–समय पर विरोध करते रहे, लेकिन उनको एक नई धारा मिली 1857 की क्रांति में उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलन किये। 1857 की क्रांति में छत्तीसगढ़ के आदिवासियों योद्धाओं के हाथ में ही था। छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद वीरनारायण सिंह को कौन नहीं जानता? महात्मा गांधीके नेतृत्व में जब सत्याग्रह के रुप में मध्य प्रांत के छत्तीसगढ़ के अनेक आदिवासी जनजातियों ने हिस्सा लिया था। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के पन्नों में भले ही आदिवासी जनजातियों के योगदानों को नकार दिया गया हो, परन्तु मध्य प्रांत के आदिवासी जनजाति देश को स्वतंत्रता दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

## संदर्भ सूची

1. सी, ग्लासफर्ड रिपोर्ट–1862 पृ. 160।
2. शुक्ल, हीरालाल, (2009) *बस्तर का मुक्ति संग्राम,* मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रनथ अकादमी, भोपाल, पृ. 69।
3. शुक्ल, हीराल, (1963) *बस्तर का मुक्ति संग्राम,* पृ.75.18 भंजदेव, प्रवीरचंद, लोहंडीगुड़ा तरोंगनी, लक्ष्मी प्रिटिंग, प्रेस रायपुर, पृ. 47।
4. शुक्ल, हीराल, (1963) *बस्तर का मुक्ति संग्राम,* पृ.75.18 भंजदेव, प्रवीरचंद, लोहंडीगुड़ा तरोंगनी, लक्ष्मी प्रिटिंग, प्रेस रायपुर, पृ. 71–72।
5. शुक्ल, हीराल, (1963) *बस्तर का मुक्ति संग्राम,* पृ.75.18 भंजदेव, प्रवीरचंद, लोहंडीगुड़ा तरोंगनी, लक्ष्मी प्रिटिंग, प्रेस रायपुर, पृ. 69।
6. शुक्ल, हीराल, (1963) *बस्तर का मुक्ति संग्राम,* पृ.75.18 भंजदेव, प्रवीरचंद, लोहंडीगुड़ा तरोंगनी, लक्ष्मी प्रिटिंग, प्रेस रायपुर, पृ. 69।
7. शुक्ल, हीरालाल, *आदिवासी बस्तर का वृहद इतिहास,* चतुर्थ खंड, बी, आर. पब्लिकेशन, दिल्ली पृ. 163।
8. वर्ल्यानी, जे.आर. एवं साहसी वी.डी. (1998) *बस्तर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,* दिव्या प्रकाशन कांकरे, पृ. 29।
9. वर्ल्यानी, जे.आर. एवं साहसी वी.डी. (1998) *बस्तर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,* दिव्या प्रकाशन कांकरे, पृ. 49।
10. वर्ल्यानी, जे.आर. एवं साहसी वी.डी. (1998) *बस्तर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,* दिव्या प्रकाशन कांकरे, पृ.39।
11. वर्मा, भगवान सिंह, (2003) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृ. 239।
12. बेहार, रामकुमार एवं निर्मला, (1985) *बस्तर आरण्यक,* जगदलपुर, पृ. 35।
13. ठाकुर, केदारनाथ, (2005) *बस्तरभूषण,* नवकार प्रकाशन, कांकेर, पुनर्मुद्रित, पृ.30।
14. झा, रोहिणी कुमार, (2007) *क्रांतिदूत– प्रवीरचंद भंजदेव, छत्तीसगढ़,* छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर, पृ. 21।

15. झा, रोहिणी कुमार, (2007) *क्रांतिदूत– प्रवीरचंद भंजदेव, छत्तीसगढ़,* छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर, पृ. 52–53।

16. झा, रोहिणी कुमार, (2007) *क्रांतिदूत– प्रवीरचंद भंजदेव, छत्तीसगढ़,* छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर, पृ.51।

17. जगदलपुरी, लाला, (2007) *बस्तर इतिहास एवं संस्कृति,* मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल. पृ. 84–85।

18. ए. वेदीएली, दि रुलिंग चीफ्स, *नोबेल्सएवं जमींदर्स ऑफ इंडिया,* जिल्द–1.पृ. 460।

––==00==––